एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सरसों की प्रमुख बीमारियां एवं उनकी रोकथाम के उपाय

(पूनम कुमारी[1], *प्रवेश कुमार[1], डॉ जितेन्द्र कुमार[2], एवं डॉ वेद प्रकाश यादव[3])
[1]पादप रोग विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[2]सस्य विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[3]आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्याल, जोबनेर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: parveshchauhan777@gmail.com

तिलहन की फसलों में सरसों का भारत में विशेष स्थान हैं यह रबी की मुख्य फसल हैं समय–समय पर सरसों की फसल में अनेक प्रकार के रोग लगते हैं। हालांकि, इनमें से कुछ रोग आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं इसलिए यह अति आवश्यक है कि इन रोगो की सही पहचान कर उचित रोकथाम की जाए। यदि समय रहते इन रोगों का नियंत्रण कर लिया जाये तो सरसों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा सकती हैं।

सफेद रतुआ *(Albugo candida)*

लक्षण: चमकदार सफेद से मलाईदार पीले रंग के उभरे हुए दाने पत्तियों के निचले हिस्से पर विकसित होते हैं जबकि पत्तियों का ऊपरी भाग पीला हो जाता है। नम परिस्थितियों में, पत्तियों के दोनों किनारों पर सफेद दाने बन जाते हैं जो शुरू में चिकने होते हैं, लेकिन बाद में टूटकर सफेद से मलाईदार रंग के स्पोरैंगिया बन जाते हैं। तने और पुष्पक्रम पर सफेद दाने भी दिखाई देते हैं। तने और पुष्प भागों की सूजन और विकृति जैसी विकृतियों का निर्माण करता है। इसका परिणाम हाइपरट्रॉफी और हाइपरप्लासिया में होता है जिसे आमतौर पर स्टैगहेड कहा जाता है, जो उपज के अधिकांश नुकसान का कारण बनता हैं है। सफेद जंग और डाउनी मिल्ड्यू का मिश्रित संक्रमण अक्सर नम परिस्थितियों में स्टैगहेड पर विकसित होता है।

अल्टरनेरिया अंगमारी *(Alternaria brassicae, A. brassicicola)*

लक्षण: यह रोग पौधों की निचली सतह पर छोटे–छोटे गहरे भूरे रंग के बिंदु के रूप में प्रकट होता हैं जो बाद में तने और फली तक फैल जाता है तेजी से बढ़कर एक सेंटीमीटर तक के वृताकार बड़े दब्बों में परिवर्तित हो जाता हैं इन्ही दब्बों पर गाढ़ा वलय और घाव के चारों ओर पीले रंग का एक क्षेत्र पत्तियों पर बन जाता है। पत्तियों पर कई घाव गंभीर संक्रमण के तहत झुलसने का कारण बनते हैं। तने और फलियों पर गहरे भूरे, गोलाकार से रैखिक घाव भी विकसित हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप छोटे, और मुरझाए हुए बीज बनते हैं।

डाउनी मिल्ड्यू: *(Peronospora parasitica)*

लक्षण: यह रोग युवा पौधों पर निचली पत्तियों के नीचे की तरफ छोटे मलाईदार से हल्के भूरे रंग के घावों के रूप में दिखाई देता है जो आकार में बड़े हो जाते हैं, जबकि पत्तियों के ऊपरी आकार में भीगे हुए पीले धब्बे दिखाई देते हैं। पत्तियाँ अंततः सूख जाती हैं और आसानी से फट जाती हैं। सफेद रतुआ रोगजनक द्वारा बनने वाले तनों और स्टैगहेड्स पर भी कवक की कोमल फफूंदी की वृद्धि दिखाई देती है। स्टैगहेड्स पर सफेद रतुआ और कोमल फफूंदी का मिश्रित संक्रमण होता है।

सफेद चूर्णी रोग (पाऊडरी मिल्ड्यू) *(Erysiphe cruciferarum)*

लक्षण: यह रोग फरवरी–मार्च के दौरान प्रजनन अवस्था में होता है। लक्षण पत्तियों के दोनों ओर गंदे सफेद, गोलाकार, आटे के धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं। अनुकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में पूरी पत्तियां और तना प्रभावित होते हैं।

गठीली/मांसल जड़ो का रोग *(Plasmodiophora brassicae)*

लक्षण: प्रभावित पौधे की पत्तियां हल्के हरे या पीले रंग की हो जाती हैं पौधे बौने रह जाते हैं और मुरझा जाते हैं। बाद में पौधे मर जाते हैं।

स्क्लेरोटिनिया तना सड़न *(Sclerotinia sclerotiorum)*

लक्षण: तने पर लम्बे पिले दब्बे बनते हैं जिन पर कवक जाल रुई की तरह फैल जाता हैं जब तना चारों और से कवक जाल से घिर जाता हैं तब पौधे मुरझा क्र सकने लगते हैं इस रोग के कारण पौधे की वृद्धि रुक जाती हैं और वे बौने रह जाते हैं रोग के कारण तना फट जाता हैं रोग ग्रस्त तने की सतह पर भूरी–सफेद या काली–काली गोल आकृति बन जाती हैं

जीवाणु जनित रोग *(Xanthomonas campestris* pv. *campestris)*

लक्षण: लगभग दो महीने के पौधे पर लक्षण दिखाई देते हैं। जमीनी स्तर से तने पर गहरे रंग की धारियाँ बनती हैं। धीरे–धीरे ये धारियाँ बड़ी हो जाती हैं और तने को घेर लेती हैं। आंतरिक सड़न के कारण तना खोखला हो जाता है। निचली पत्तियाँ मध्य शिरा में दरार, शिराओं का भूरापन और मुरझाना देखने को मिलता है। गंभीर मामलों में, तने के वेसिकुलर बंडल भी भूरे रंग के हो जाते हैं और पौधा गिर जाता है।

सरसों में एकीकृत रोग प्रबंधन

सांस्कृतिक नियंत्रण: रोगग्रस्त मलबे को जलाना, फसल के बाद गहरी जुताई, उपयुक्त उन्नत किस्मों का उपयोग, संतुलित उर्वरकों का उपयोग, रोगजनक मुक्त बीज का उपयोग, सही समय पर फसल की बुवाई, खरपतवार निकालें।, अतिरिक्त पानी का निकास, अधिक सिंचाई से बचें, और फसल गैर मेजबान फसलों के साथ रोटेशन।

रेपसीड–सरसों में रोगों का रासायनिक नियंत्रण

1 फसल की बोआई समय से करनी चाहिए।
2 पानी का उचित निकास रखना चाहिए।
3 लम्बा फसल चक्र अपनाना चाहिए।
4 खरपतवारो को नष्ट कर देना चाहिए।
5 सवस्थ, स्वच्छ व् रोग रहित बीज का उपयोग करना चाहिए।
6 गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए।
7 आल्टरनेरिया झुलसा, फुलिया और सफेद रतुआ की रोकथाम के लिए पहली फसल के बचे हुए रोगग्रस्त अवशेषों को नष्ट करें।
8 बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्रा. मेन्कोजैब (डाइथेन या इन्डोफिल एम–45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिनके अन्तर पर 3–4 बार छिड़काव करें।
9 फसल की बिजाई सिफारिश किये गये समय पर करें बिजाई से पहले 2 ग्राम कारबेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें।
10 जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45–50 दिन तथा 65–70 दिन के बाद कारबेन्डाजिम का 0.1 प्रतिषत की दर से दो छिड़काव करें।